अमर उजाला

नई दिल्ली । सोमवार, 20 मई 2019

प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक

स्थापना वर्ष : 1948

सकारात्मक बने रहना और कृतज्ञ होना यह निर्धारित करना है कि आप अपना जीवन कैसे जी रहे हैं...
-जोएल ओस्टिन

अमेरिकी पादरी और लेखक

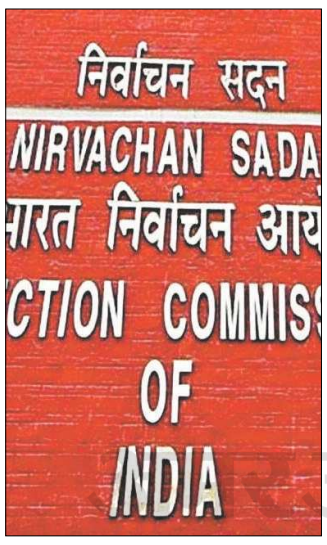

इतनी विशाल और जटिल चुनावी प्रक्रिया को प्रभावी तरीके से अंजाम देने वाले चुनाव आयोग को संदिग्ध बनाने की कोई भी कोशिश बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है।

चुनाव आयोग की साख

लोकसभा का चुनाव खत्म होने से पहले ही चुनाव आयोग के अंदरूनी विवादों का सार्वजनिक होना न केवल बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है, बल्कि इससे इस सांविधानिक संस्था की साख पर भी प्रतिकूल असर पड़ा है। यह भूलना नहीं चाहिए कि इसी चुनाव आयोग ने इतनी लंबी और जटिल चुनावी प्रक्रिया को बेहद प्रभावी तरीके से अंजाम दिया है, और पश्चिम बंगाल को छोड़कर कहीं भी हिंसा नहीं हुई। दरअसल क्लीन चिट देने समेत दूसरे मामलों में आयोग के बहुमत के फैसले से चुनाव आयुक्त अशोक लवासा पहले ही सहमत नहीं थे। लेकिन उनके अल्पमत फैसले को सर्वोच्च न्यायालय के फैसलों की तरह दर्ज और सार्वजनिक न किए जाने के विरोध में मुख्य चुनाव आयुक्त सुनील अरोड़ा को पत्र लिखकर आचार संहिता से संबंधित बैठकों में शामिल होने से इनकार कर उन्होंने इस विवाद को तूल दे दिया। उसके बाद मुख्य चुनाव आयुक्त को अभूतपूर्व कदम उठाते हुए बयान जारी करना पड़ा। चुनाव आयुक्तों के बीच मुद्दों पर असहमति होना लोकतांत्रिक व्यवस्था में स्वाभाविक है। लेकिन बेहतर यह होता कि शुरू में ही असहमति के इस मुद्दे को आपस में निपटा लिया जाता। अगर वैसा होता, तो शायद यह असहमति चुनाव आयोग के बाहर नहीं जाती। अलबत्ता चुनाव आयुक्त ने अपनी असहमति को दर्ज न करने के विरोध में जिस तरह बाद की बैठकों में शामिल होने से ही इनकार कर दिया, उससे भी सहमत नहीं हुआ जा सकता। चुनाव आयोग सुप्रीम कोर्ट नहीं है। आयोग में चुनाव आयुक्तों और मुख्य चुनाव आयुक्त के बीच अगर मतभिन्नता होती है, तो उस पर बहुमत के आधार पर ही फैसला होता है, वहां असहमत टिप्पणी को दर्ज करने की कोई परंपरा नहीं है। फिर अपनी असहमति को दर्ज करने का आग्रह क्यों? चुनाव आयुक्त का रोष एक और वजह से सही नहीं। चुनाव आयोग में विरोध और असहमति के मामले पहले भी सामने आए हैं, लेकिन ऐसे मामले संबंधित आयुक्त के सेवानिवृत्त होने या उनकी कोई किताब आने पर ही सार्वजनिक हुए हैं। लेकिन दुर्योग से यह असहमति इस बार उनके कार्यकाल में ही सामने आ गई है। उम्मीद करनी चाहिए कि कल की बैठक में मुख्य चुनाव आयुक्त और आयुक्त के बीच आपसी सहमति से इस विवाद का पटाक्षेप हो जाएगा। चुनाव आयोग जैसी सांविधानिक संस्था को किसी भी स्थिति में संदिग्ध नहीं बनाया जाना चाहिए।

दीदी के गढ़ में मोदी का रथ

पश्चिम बंगाल के मतदाताओं में भाजपा के प्रति भारी उत्साह देखा गया, जिसकी कुछ महीने पहले तक कल्पना नहीं की जा सकती थी। पर क्या नतीजे में इसकी झलक दिखेगी?

अजय बोस, वरिष्ठ पत्रकार

जब तक आप ये पंक्तियां पढ़ रहे होंगे, तब तक सात चरणों में फैला मतदान संपन्न हो चुका होगा। हालांकि यह दुर्भाग्यपूर्ण ही है कि आखिरी चरण में भी पश्चिम बंगाल हिंसा से मुक्त नहीं रह पाया।

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के गढ़ को ध्वस्त करने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनके राजनीतिक सहयोगी भाजपा अध्यक्ष अमित शाह द्वारा किए गए आक्रामक प्रयास का नतीजा क्या होगा, यह देखना अभी बाकी है। राज्य के विभिन्न वर्गों में भाजपा के लिए भारी उत्साह देखा गया है। समाज के विभिन्न वर्गों में भाजपा की जो विराट छवि बनी है, कुछ महीने पहले तक उसकी कल्पना नहीं की जा सकती थी। इस परिस्थिति ने बंगाल की योद्धा रानी को रक्षात्मक होने के लिए विवश कर दिया है। इसके बावजूद तृणमूल के परास्त होने की संभावना अभी दूर की कौड़ी लगती है। पिछले दो महीने से निर्बाध, अथक प्रचार अभियान के बावजूद भाजपा 42 संसदीय सीटों में से एक दर्जन से अधिक सीटों पर तृणमूल कांग्रेस को कड़ी चुनौती नहीं दे पाई। ऐसे में, वहां भाजपा को शानदार लाभ शायद ही मिल पाए, जैसा कि उसके नेता और समर्थक दावा कर रहे हैं।

अलबत्ता यह उस राज्य में भाजपा की असाधारण प्रगति को कम करके आंकना नहीं है, जहां वह एक दशक पहले अस्तित्वहीन थी। वाम दल और कांग्रेस के आभासी पतन (ये दोनों पहले तृणमूल की मुख्य विरोधी पार्टियां थीं) और विशाल वित्तीय संसाधनों के जरिये मोदी और शाह की पार्टी ममता के शासन के विरोधियों में यह चर्चा पैदा कर, कि दिल्ली का दबंग बादशाह ममता को अपदस्थ करना चाहता है, भाजपा के लिए समर्थन बढ़ाने में सक्षम रही है।

यहां तक कि 2014 के लोकसभा चुनाव में भी मोदी लहर पर सवार भाजपा पश्चिम बंगाल में अपने वोट शेयर को छह फीसदी से लगभग तीन गुना बढ़ाकर 17 फीसदी करने में सक्षम रही थी, लेकिन वह अपनी सीटों की संख्या एक से महज दो करने में ही सफल रही। इस बार के चुनाव में 2014 की तुलना में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रति देश भर में समर्थन में जहां कमी आई है, वहीं पश्चिम बंगाल में उनके प्रति समर्थन में तेजी आई है। ऐसे में अगर यह धारणा बनी है कि वह दीदी के गढ़ को भेदने वाले हैं, तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं।

हालांकि पश्चिम बंगाल में चुनाव परिदृश्य की बारीकी से जांच से पता चलता है कि भाजपा को राज्य में दोहरे अंकों में सीट पाने के लिए वोट शेयर में चमत्कारी वृद्धि की आवश्यकता होगी। यह इस तथ्य से रेखांकित होता है कि पश्चिम बंगाल की 42 संसदीय सीटों में से 36 में भाजपा और तृणमूल कांग्रेस के बीच 25 प्रतिशत से अधिक वोट शेयर का अंतर है, जो दोनों पार्टियों को 2014 में मिला था। इन 36 सीटों में से भाजपा को 25 में 10 प्रतिशत से भी कम वोट मिले और शेष 11 में 15 प्रतिशत से अधिक वोट नहीं मिले।

इस बात की तो बहुत चर्चा हो रही है कि ममता विरोधी विपक्षी मतों, खासकर वाम दलों के बड़े आदिवासी और दलित वोट बैंक का फायदा भाजपा को मिल रहा है, लेकिन राजनीतिक पर्यवेक्षक इस बात की अनदेखी कर रहे हैं कि तृणमूल कांग्रेस को भी बंगाल में पारंपरिक विपक्ष के पतन का लाभ मिल रहा है। मिसाल के तौर पर, सेंटर फॉर स्टडीज ऑफ डेवलपिंग सोसाइटीज (सीएसडीएस) ने 2014 के लोकसभा चुनाव के बाद एक अध्ययन में बताया कि उस चुनाव में कुल मुस्लिम वोटों का 55 प्रतिशत कांग्रेस और वाम दलों को गया था। लेकिन इस बार मुस्लिम मतदाताओं द्वारा एकमुश्त तृणमूल कांग्रेस को वोट दिए जाने की संभावना है, जिसे भाजपा के उग्र हिंदुत्व के खिलाफ एकमात्र गोलकीपर के रूप में देखा जा रहा है। महत्वपूर्ण बात यह है कि आदिवासी वोट मात्र आधा दर्जन सीटों पर निर्णायक है, जबकि मुस्लिम वोट उसके तीन गुना सीटों पर नतीजों को प्रभावित कर सकता है।

पश्चिम बंगाल में मोदी के रथ के लिए अन्य अवरोध स्थानीय संगठन और नेताओं का पूर्णतः अभाव है, और जो चुनाव जीतने के लिए पूरी तरह से प्रधानमंत्री के व्यक्तिगत करिश्मे पर निर्भर हैं। हालांकि भाजपा ममता के प्रमुख सहयोगी मुकुल राय और तृणमूल कांग्रेस के पूर्व दबंग नेता अर्जुन सिंह जैसे नेताओं को अपने पाले में लाने में सफल रही है, लेकिन यह जोखिम भरी रणनीति है, क्योंकि न तो मोदी और न ही शाह पश्चिम बंगाल की राजनीति की आंतरिक गतिशीलता से बहुत परिचित हैं। बैरकपुर सीट पर इसे अच्छी तरह समझा जा सकता है, जहां स्थानीय डॉन और तृणमूल कांग्रेस के बागी अर्जुन सिंह भाजपा प्रत्याशी के रूप में पूर्व रेल मंत्री और ममता के विश्वस्त दिनेश त्रिवेदी को पछाड़ने की उम्मीद कर रहे हैं।

जब इस वर्ष की शुरुआत में अर्जुन सिंह ने ममता के खिलाफ बगावत की थी, तो भाजपा ने उन्हें ट्रॉफी के रूप में लपक लिया था। उस समय व्यापक रूप से यह माना जाता था कि दो बार से लगातार बैरकपुर से जीतने वाले तृणमूल के दिनेश त्रिवेदी इस बार हार जाएंगे। हालांकि दीदी ने, जो अपने पूर्व गुर्गे के भाजपा में जाने को लेकर उग्र थीं, बेहद मजबूती से मतदाताओं को अपने पाले में किया, जिससे यह साबित हुआ कि वह चालाक होने के साथ-साथ दृढ़ संकल्पित भी हैं। कहा जाता है कि उन्होंने मुकुल राय की अर्जुन सिंह के खिलाफ व्यक्तिगत दुश्मनी का इस्तेमाल करते हुए भाजपा की बाजी पलट दी। मुकुल राय के पुत्र शुभ्रांशु अपने पिता के भाजपा में जाने के बाद भी तृणमूल कांग्रेस के विधायक बने हुए हैं।

विडंबना देखिए कि बैरकपुर में मतदान के दिन त्रिवेदी क्रिकेट खेलते हुए सुकून महसूस कर रहे थे, जबकि पूर्व डॉन अर्जुन सिंह ने शिकायत की कि तृणमूल के गुंडों ने उनकी पिटाई की! पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री में यह कौशल है कि वह अपने समर्थकों को संगठित करती हैं और अपने विरोधियों का रास्ता रोक देती हैं। केंद्रीय सुरक्षा बल और चुनाव आयोग पर केंद्र सरकार के नियंत्रण के बावजूद ममता का यह कौशल राज्य में चुनाव परिणामों को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

अंतर्ध्वनि

>> हेलेन केलर

खुशियां शुभ्र चमकदार ओस की बूंदों की तरह अनंत हैं

मैं नेत्रहीन हूं और मैंने कभी इंद्रधनुष नहीं देखा; किंतु मुझे उसकी सुंदरता के बारे में बताया गया है। मैं जानती हूं कि उसकी सुंदरता सदैव ही अधूरी और टूटी-फूटी होती है। वह आसमान पर कभी भी पूर्णाकार में प्रकट नहीं होता। यही बात उन सभी चीजों के बारे में सही है, जिन्हें हम पृथ्वी वाले जानते हैं। जिस तरह इंद्रधनुष का वृत्त खंडित होता है, उसी तरह जीवन भी अधूरा है और हममें से हरेक के लिए टूटा-फूटा है। हम ब्राउनिंग के इन शब्दों, 'पृथ्वी पर टूटे हुए बिंब, स्वर्ग में एक पूर्ण चंद्र' का अर्थ तब तक नहीं समझ सकेंगे, जब तक हम अपने खंड जीवन से अनंत की ओर कदम नहीं बढ़ा लेते।

सुख का एक द्वार बंद होने पर, दूसरा खुल जाता है; लेकिन कई बार हम बंद दरवाज़े की तरफ इतनी देर तक ताकते रहते हैं कि जो द्वार हमारे लिए खोल दिया गया है, उसे देख नहीं पाते। आनंद स्वार्थ-सिद्धि से नहीं मिलता, बल्कि किसी समुचित उद्देश्य के प्रति वफादार होने से मिलता है। सुरक्षा, निश्चिंतता या बेफिक्री एक कल्पना है, अंधविश्वास है। जीवन अगर साहस से भरी यात्रा न हुआ, तो कुछ न हुआ। जो लोग खुशी की तलाश में घूमते हैं, वे अगर एक क्षण रुकें और सोचें तो वे यह समझ जाएंगे कि सचमुच खुशियों की संख्या पांव के नीचे के दूर्वादलों की तरह अनगिनत है; या कहिए कि सुबह के फूलों पर पड़ी हुई शुभ्र चमकदार ओस की बूंदों की तरह अनंत है। इतिहास ने जिन स्त्री-पुरुषों को मानवता की सेवा का अवसर देकर समादृत किया है, उनमें से अधिकांश को विपरीत परिस्थितियों का अनुभव हुआ है। आंतरिक सत्यों में हमारी अंधता के कारण कोई अंतर नहीं पड़ता। अधिकतम सौंदर्य-दृष्टि तक केवल कल्पना के द्वारा ही पहुंचा जा सकता है।

-सुप्रसिद्ध अमेरिकी लेखिका और विचारक

चुनावी नतीजे का समय

जिस दिन की प्रतीक्षा महीनों से थी, वह इस सप्ताह आने वाला है। यह चुनाव इतना लंबा चला है कि अगली बार चुनाव आयोग को कोई ऐसा उपाय ढूंढना होगा, जिससे इतना लंबा चुनाव अभियान फिर से बर्दाश्त न करना पड़े।

तवलीन सिंह

जिस दिन की प्रतीक्षा महीनों से थी, वह इस सप्ताह आने वाला है। इसी सप्ताह हम जान जाएंगे कि मोदी सरकार एक बार फिर बनेगी कि नहीं। यह वह समय है, जब हम राजनीतिक पंडित देश भर में घूम-घामकर वापस दिल्ली लौट आते हैं और चुनाव अभियान का फुरसत में विश्लेषण करने बैठते हैं। सो यह लिखने से पहले ऐसा मैंने भी किया। कॉफी का प्याला अपने लैपटॉप के बगल में रखा और पिछले दो महीनों के अखबारों के संपादकीय पढ़ने लगी। यू-ट्यूब पर कामदार और नामदार (बहन-भाई) के भाषण सुने। फिर उस गठबंधन के आला नेताओं के भाषण सुने, जिसको मोदी महामिलावट कहते हैं। ऐसा करने के बाद लगा, जैसे चुनाव आयोग ने आम चुनाव को इतना लंबा घसीट कर अन्याय किया।

ऐसा इसलिए कहती हूं, क्योंकि शुरू में असली मुद्दे सबने उठाने के प्रयास किए थे। विपक्ष की तरफ से बेरोजगारी और किसानों की समस्याओं की बातें हुई थीं। विकास, सुरक्षा और गरीबी हटाने के सफल प्रयासों के मुद्दे नरेंद्र मोदी और उनके साथियों ने उठाए। इन बातों के बीच ही पुलवामा का वह आत्मघाती आतंकवादी हमला और इसके बाद बालाकोट पर भारत का जवाबी हमला हुआ। कुछ हफ्ते यही बातें चलीं। इस दौरान मैं जब राजस्थान गई, तो ऐसा लगा, जैसे इस चुनाव में देश की सुरक्षा सबसे बड़ा मुद्दा बनकर रहेगा। उन दिनों मोदी की प्रशंसा जगह-जगह सुनने को मिली।

इसके कुछ सप्ताह बाद मैं जब उत्तर प्रदेश गई, तो पाया कि मुख्य मुद्दे बदल कर फिर से आर्थिक हो गए थे। मथुरा चुनाव क्षेत्र में मुसलमानों से बातें कीं, तो मोदी सरकार की सिर्फ आलोचना सुनी। भीड़ द्वारा की गई लिंचिंग की घटनाएं मुद्दा थीं, लेकिन् उत्तर प्रदेश में उतना ही बड़ा मुद्दा यह भी था कि जिन व्यवसायों में मुसलमान काम करते हैं, उनको तकरीबन बंद कर दिया गया है। जो कभी पशुपालन से गुजारा करते थे या चमड़ा या मांस उद्योग में काम करते थे, वे अब मजदूरी करते हैं। हिंदू किसान भी परेशान हैं, क्योंकि अब बूढ़ी गाएं बेची नहीं जातीं, सो भूखी, आवारा गाएं फसल बर्बाद कर रही हैं। अगले प्रधानमंत्री के लिए यह बहुत बड़ी समस्या बन सकती है। समाधान ढूंढना मुश्किल हो गया है, क्योंकि गोरक्षकों को अब कौन रोक सकता है?

इसके बावजूद यह कहना जरूरी है कि मैंने अपने चुनावी दौरों में सौ से ज़्यादा लोगों से बातें की होंगी और उनमें दस से भी कम ऐसे लोग मिले होंगे, जिन्होंने मोदी की आलोचना की। अधिकतर ऐसे लोग मिले, जिन्होंने बेझिझक कहा कि वे मोदी को दोबारा प्रधानमंत्री बनते देखना चाहते हैं। जिनको झिझक थी, वे स्पष्ट कर देते थे कि मोदी ने अपने सारे वादे तो पूरे नहीं किए हैं, फिर भी राहुल गांधी से अच्छे हैं, सो उनका वोट मोदी को मिलेगा। मोदी की लोकप्रियता का सबसे बड़ा कारण है कि मतदाता देख चुके हैं कि वह दिन रात देश की भलाई के लिए काम कर रहे हैं, अपने परिवार की भलाई के लिए नहीं।

कुछ ही दिनों में पता लग जाएगा कि प्रधानमंत्री निवास में किसका प्रवेश होगा। काश कि वह दिन हम कुछ घंटों में ही ला सकते। यह चुनाव इतना लंबा चला है कि अगली बार चुनाव आयोग को कोई ऐसा उपाय ढूंढना होगा, जिससे इतना लंबा चुनाव अभियान फिर से बर्दाश्त न करना पड़े। इतने लंबे चुनाव अभियान से नुकसान राजनीतिज्ञों का इतना नहीं हुआ है, जितना देश का हुआ है। चुनाव आयोग को अगली बार कम दिनों में आम चुनाव को समाप्त करने का प्रयास करना होगा।

हरियाली और रास्ता

राकेश, दादी और गेहूं की बोरियां

एक युवक की कथा, जिसे उसकी दादी ने जीवन को खुशहाल बनाने का अनूठा उपाय सुझाया।

राकेश बहुत मेहनती लड़का था। उसके क्लास के सभी बच्चे ट्यूशन पढ़ते थे, लेकिन ट्यूशन न पढ़ने पर भी राकेश के बहुत अच्छे नंबर आते थे। वह सिर्फ पढ़ाई में ही नहीं, बल्कि खेल-कूद व अन्य गतिविधियों में भी काफी तेज था। लेकिन दसवीं की बोर्ड परीक्षा में उसे बहुत कम अंक मिले। उसे समझ में ही नहीं आ रहा था कि यह कैसे हुआ। वह रोते हुए घर पहुंचा। घर पर उसकी दादी खेत से लाए गए गेहूं को बोरियों में डाल रही थीं। जब उन्होंने राकेश को रोते हुए देखा, तो पूछा, क्या बात हो गई, बेटा? तुम रो क्यों रहे हो? राकेश ने बड़ी मायूसी के साथ दादी को बताया कि बोर्ड परीक्षा में उसे कम अंक मिले हैं। दादी ने उसे सांत्वना देते हुए कहा, लेकिन मेरे लिए तो तुम हमेशा अव्वल ही रहोगे। अच्छा बताओ, यहां गेहूं की कितनी बोरियां हैं। राकेश ने बोरियां गिनीं और बोला, दस। लेकिन इससे यह थोड़े ही पता चलता है कि मैं पढ़ने में अच्छा हूं! दादी बोलीं, यहां पर दस बोरियां हैं, जिनमें चालीस-चालीस किलो गेहूं भरा हुआ है। यानी सारा मिलाकर चार सौ किलो गेहूं हुआ। कल्पना करो कि अब इस चार सौ किलो गेहूं को तुम्हें बाजार में बेचना है, जिसे तुम छोटी-छोटी बोरियों में भरकर बाजार ले जा रहे हो। लेकिन रास्ते में कोई दस किलो गेहूं की गठरी चुराकर भागने लगता है। क्या तुम बाकी का गेहूं छोड़कर उसके पीछे भागने लगोगे? या फिर उसे जाने दोगे, और सतर्क रहोगे कि आगे कोई ऐसा न कर पाए। राकेश बोला, स्वभाविक है कि मैं सतर्क रहूंगा कि आगे कोई ऐसा न कर पाए। दादी बोलीं, गेहूं की अलग-अलग बोरियों की तरह हमारी जिंदगी के भी अलग-अलग चरण होते हैं। किसी एक चरण में से अगर कुछ पल खराब भी हो जाएं, तो भी बचे हुए पल हमारे पास ही रहते हैं।

जिंदगी का कोई अनुभव एक हिस्सा भर होता है, उसे नियति नहीं मानना चाहिए।

मंजिलें और भी हैं

>> शिवा

भाई की मौत ने लोगों को बचाने का जुनून पैदा किया

मैं हैदराबाद में रहता हूं। पिछले करीब पंद्रह साल से मैं शहर के हुसैन सागर लेक और आसपास के इलाकों में आत्महत्या की कोशिश करने वाले लोगों को बचाने का काम करता हूं।

मै जब छोटा था, तब बहुत शरारत करता था। इससे परेशान होकर मेरे माता-पिता ने मुझे होस्टल में डाल दिया था। मेरा होस्टल स्कूल से बहुत दूर था। एक दिन जब मैं स्कूल से होस्टल लौट रहा था, तो सड़क से एक धार्मिक जुलूस निकल रहा था और बहुत भीड़ थी। मैं भारी भीड़ देखकर डर गया और भागते-भागते भटक गया। मैं इतना बदकिस्मत था कि न होस्टल लौट पाया और न ही अपने मां-बाप से मिल पाया। मेरी जिंदगी एक झटके में बेहद नाटकीय ढंग से बदल गई। कहां मैं पढ़-लिखकर बड़ी नौकरी करता, और कहां अब मैं अपनी भूख मिटाने के लिए सड़क पर भीख मांग रहा था। उसी दौरान एक महिला से मेरी मुलाकात हुई, जिसने मुझे अपना बेटा मान लिया। इस तरह सड़क पर मुझे दूसरी मां मिल गई थी। वह अपने बच्चों और मुझमें कोई भेदभाव नहीं करती थी। जल्दी ही मुझे एहसास हो गया कि दूसरी मां से मिलाकर ईश्वर ने मेरे साथ हुए अन्याय का खात्मा कर दिया है। लेकिन मेरी खुशी ज्यादा दिन नहीं टिकी। एक दिन मेरे बड़े भैया हुसैन सागर लेक घूमने गए थे। वहां उन्होंने किसी को पानी में डूबते देखा, तो छलांग लगा ली। पर अनजान आदमी के साथ-साथ वह खुद भी डूब गए। यह खबर जब मां को मिली, तो रो-रोकर उनका बुरा हाल था। मुझे बहुत अफसोस हो रहा था कि जिस महिला ने मुझ जैसे एक सड़क पर के लड़के को अपने बेटे की तरह पाला, उनके साथ ऐसा अन्याय नहीं होना चाहिए था। काश, भैया की जगह मैं होता। अफसोस की बात यह थी कि वे दोनों लाशें भी नहीं मिली थीं। उस हादसे के बाद मैंने दो प्रण किए। एक यह कि हुसैन सागर लेक में किसी को डूबकर मरने नहीं दूंगा। और दूसरा यह कि कोई उसमें डूबकर मर गया हो, तो उसका शव बाहर निकाल लाऊंगा, ताकि उसके परिवार वालों को अंतिम संस्कार में असुविधा न हो। हुसैन सागर लेक बेहद खूबसूरत तो है ही, यहां बहुत लोग आत्महत्या करने के लिए भी आते हैं। मैंने अब तक यहां लगभग एक सौ लोगों की जान बचाई है। ये वे लोग हैं, जिन्होंने लेक में कूदकर आत्महत्या करने की कोशिश की थी। जबकि लेक से अभी तक एक हजार से अधिक शव मैंने निकाले हैं। मैं उन शवों का अंतिम संस्कार भी कर देता हूं, जिनके कोई रिश्तेदार नहीं मिलते। चूंकि मैं लंबे समय से यह काम कर रहा हूं, इसलिए स्थानीय पुलिस मेरी मदद करती है, और मेरी सहायता लेती भी है। जैसे कि कभी-कभी वह देर शाम या रात को लेक में किसी शव के होने की मुझे सूचना देती है। मैं लाश को लेक से बाहर निकालने में पुलिस की मदद करता हूं। जिन लोगों की मैंने जान बचाई है, उनके परिजन भी मेरे अभियान में मदद करते हैं। मेरी कोई नौकरी नहीं है। त्योहारों पर लेक में जो प्रतिमाएं विसर्जित की जाती हैं, उनमें से लोहा और दूसरे धातु निकालकर मैं बाजार में बेचता हूं। कभी-कभी पुलिस विभाग भी मेरी कुछ आर्थिक मदद करता है। मेरी आय काफी नहीं है, और राज्य सरकार ने भी मेरी कोई मदद नहीं की है। पर लोगों की जान बचाने के अपने काम से मैं संतुष्ट हूं। अभी तो मैं जवान हूं। जब तक मेरा शरीर साथ देगा, मैं यह काम करता रहूंगा।

हुसैन सागर लेक में कूदकर आत्महत्या की कोशिश करते सैकड़ों लोगों को मैं बचा चुका हूं।

-विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित।

खुली खिड़की

सड़कों की गुणवत्ता

विकास के नित नए आयाम छू रही दुनिया में सड़कों का अहम योगदान है। ढांचागत विकास का प्रमुख अंग सड़क विभिन्न देशों में कई तरीकों से बनाई जाती है। सड़कों की गुणवत्ता को लेकर 2018 में एक रिपोर्ट आई, जिसमें बताया गया है कि, गुणवत्ता के मामले में संयुक्त अरब अमीरात पहले स्थान पर है।

स्रोत : वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम

जाकी रही भावना जैसी

सत्संग

भगवान बुद्ध एक दिन कहीं प्रवचन दे रहे थे। उन्होंने इन शब्दों के साथ अपना प्रवचन खत्म किया, जागो, समय हाथ से निकलता जा रहा है। सभा विसर्जित होने पर वह अपने शिष्य आनंद के साथ बाहर निकलने लगे। अभी वह विहार के मुख्य द्वार तक पहुंचे ही थे कि एक किनारे खड़े हो गए। दरअसल प्रवचन सुनने आए लोग बाहर निकल रहे थे, इसलिए भीड़-सी हो गई थी।

अचानक भीड़ में से एक महिला निकलकर बुद्ध के पास आई। वह कहने लगी, तथागत, मैं एक नर्तकी हूं। आज नगर सेठ के घर पर मेरा कार्यक्रम पहले से तय था और मैं भूल चुकी थी। आपका धन्यवाद कि मुझे याद दिलाया। थोड़ी देर बाद एक डाकू ने अकेले में उनका धन्यवाद यह कहकर किया कि आपसे झूठ नहीं बोलूंगा। आपने बिल्कुल सही समय पर मुझे अपने काम पर जाने की याद दिलाई, आज डाका डालने बहुत दूर निकलना है। उसके बाद धीरे-धीरे चलता हुआ एक वृद्ध उनके पास आकर कहने लगा, मैं जिंदगी भर दुनियादारी के पीछे भागता रहा। लेकिन आज आपकी बातों से मेरी आंखें खुल गई हैं। अब मैं पैसा और परिवार के पीछे भागने के बजाय ईश्वर की आराधना में ही अपना ध्यान लगाऊंगा। बुद्ध ने आनंद से कहा, देखो, प्रवचन मैंने एक ही दिया, लेकिन उसका हर किसी ने अलग-अलग मतलब निकाला। जिसका नजरिया जैसा होता है, वह चीजों को उसी तरह देखता है।

-संकलित